e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 3, March 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.569

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 11, Issue 3, March 2022 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1103091 |

गोविंद मिश्र के उपन्यासो में सामाजिक चेतना

[1]रजनी गोस्वामी, [2]डॉ उदारता

[1]शोधकर्ता, एस. आर. के. कॉलेज., फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश

[2]सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, एस. आर. के. कॉलेज., फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश

सारांश

गोविन्द मिश्र हिंदी के चर्चित कथाकार माने जाते हैं, उन्होंने बारह उपन्यास, बारह कहानी संग्रह, यात्रा-वृत्तांत, कविता, आलोचना आदि का लेखन कार्य किया है। आपको को साहित्य अकादमी एवं सरस्वती सम्मान से सम्मानित किया गया है। उनके उपन्यासों में शिक्षा व्यवस्था के वर्तमान स्वरूप की आलोचना की गयी है।

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में शिक्षा व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। शिक्षा मूल्यों की संवाहिका होती है। आज के समय में शिक्षा का बाजारीकरण तेजी से हुआ है। बाजारीकरण के कारण जिन नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी, वह गायब हो गयी है। 'शाम की झिलमिल' उपन्यास में गोविन्द मिश्र ने इस सावल को रेखांकित करते हुए लिखा है "मैं जनता हूँ कि मैं बुद्धिमान नहीं पर उस वक्त का आदमी हूँ जब आदमी की नस्ल आज से बेहतर थी। क्योंकि हमारी पढ़ाई बेहतर थी। आज कहाँ हैं पहले जैसे नेता, डॉक्टर, अध्यापक, अफसर कोई भी। हर चीज में गिरावट क्यों हैं-साहित्य, सिनेमा, शिक्षा, संगीत कुछ उठा लीजिये। आज जो हैं उन्हें सामने जो दिखाई देता है, वे उसी से चालित होते हैं, कुछ और सोचने का बूता नहीं, इंटरनेट पर टिके, कल्पनाशीलता से शून्य, सूचनाओं से बजबज नौंनसैसिकल।" [1] गोविन्द मिश्र के कई उपन्यासों में प्राइमरी शिक्षा व्यवस्था से लेकर उच्चशिक्षा व्यवस्था तक की आलोचना की गयी है।

प्राइमरी शिक्षा व्यवस्था, समाज की बुनियाद होती है, आज वहीं घोर भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया है 'लाल पीली जमीन' उपन्यास में खंदिया (बाँदा) के स्कूल में जिला कलेक्टर के खिलाफ छात्रों के द्वारा आन्दोलन और फिर राजनीतिज्ञों के द्वारा राजनीति की कुटिल चालों की ओर इशारा किया गया है सरकार द्वारा प्रदत्त संसाधनों पर क्षेत्रीय नेताओं का प्रभुत्त्व या अधिकार का उल्लेख किया गया है। छोटी उम्र के बच्चे आन्दोलन करके राजनीति को हवा देने का कार्य करते हैं, हाईस्कूल और इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों को कलेक्टर आफिस पर उकसा करके अराजक तत्त्वों के द्वारा व्यवस्था को छिन्न-भिन्न किया जाता है। स्कूल में प्रिंसिपल पद की होड़ में राजनीति और उसमें मास्टर कंठी की मौत जैसी स्थितियों का आ जाना भी शामिल है, अस्सी से नब्बे के दशक की यह शिक्षा व्यवस्था जस की तस बनी हुयी है। बोर्ड के इम्तिहान में नक़ल माफियाओं का आतंक और क्षेत्रीय नेताओं की भागीदारी, मनचले छात्रों की गुंडागर्दी जैसी स्थितियाँ दर्शाई गयी हैं, जिनका लाभ स्कूल खोलने वाले राजनेता उठाते हैं। आज का बड़ा व्यवसाय वकीली, राजनीति और शिक्षा हो गयी है। समाज में यदि व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है तो राजनेता को चैन नहीं मिलता है। वकील बोस साहब कोर्ट की वकीली छोड़कर राजनेता बन जाते हैं और स्कूल के बहाने अपनी राजनीति चमकाना चाहते हैं। जिसका साथ पुलिस-प्रशासन, गाँव के मुखिया, जाति के प्रमुख और अध्यापक तथा छात्र तक देते हैं।

'कोहरे में कैद रंग' उपन्यास में छोटे-छोटे छात्रों में देश के प्रति भक्ति की भावना स्कूल से भरी जाती है, 'मैं' पहली बार पुलिस कस्टडी में गया था तब से उसे निर्भीक होकर जीने का बहाना मिल गया था। उन छोटे बच्चों की देश के प्रति निष्ठा, मूल्यों के प्रति निष्ठा थी, आज के परिवेश में अपने स्वार्थ के लिए अध्यापक और राजनेता स्कूल को माध्यम बनाते हैं।

'पाँच आगानों वाला घर' उपन्यास में उच्चशिक्षा प्राप्त आधुनिक युवाओं का उल्लेख किया गया है। तकनीकी ज्ञान प्राप्त करके वे बाजार के लिए एक मशीन बन जाते हैं। उनके भीतर ज्ञान, गरिमा, मानवीय मूल्य या रिश्तों के लिए कहीं जगह ही नहीं बचती है। 'पाँच आँगनों वाला घर' के पात्र रजिंदर के बेटे बंटू की शिक्षा और विदेश के प्रति दीवानी और उसके भीतर बाजारू सम्बन्ध पर भी प्रकाश डाला गया है। इस बहाने लेखक ने देश की समग्र शिक्षा व्यवस्था पर सवाल भी उठाया है। इसमें विदेशी शिक्षा के प्रति बढ़ते रुझान की ओर संकेत किया गया है, नयी टेकनालाजी और विज्ञान की पढ़ाई हेतु भारतीय छात्रों का झुकाव विदेशों की ओर बढ़ गया है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 11, Issue 3, March 2022 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1103091 |

इंजीनियरिंग, बिजनेस की पढ़ाई और चिकित्सा की शिक्षा हेतु बड़ी मात्रा में भारतीय छात्र बाहर के देशो में शिक्षा पाने हेतु गए हैं। साहित्य और समाज से लेकर नयी विचारधारा तक विदेशों से प्रभावित हो गयी है इनमें एक बड़ा तबका उस वर्ग के छात्रों का रहा है जो भारत में उच्चवर्ग से सम्बन्ध रखते हैं, इन छात्रों ने विदेशी तालीम तो हासिल कर ली किन्तु इनके भीतर अपनों के प्रति नए तरह की नफ़रत ने जन्म ले लिया, यहाँ की शिक्षा पद्धति में उन्हें अब यकीन नहीं रहा। बंटू जैसे छात्रों के मन में अब एक ही लालसा है कि वह विदेश में जाकर पढ़ाई करेगा। गोविन्द मिश्र आज की शिक्षा व्यवस्था की ओर से चिंतित होते हुए लिखते हैं कि "जो खास चीज बंटू में बंबई पहुंचकर पनपी–विदेश जाने की तड़प, वह इसी सबसे निकली थी, यों इन दिनों इंजीनियरिंग कर रहे सभी लड़के विदेश जाने का ख्वाब देखते थे।" [2] विदेशी शिक्षा के साथ-साथ वहाँ की संस्कृति को वे ग्रहण कर लेते हैं और इस परंपरावादी देश में उन्हें अपने को स्थापित करने में समय लग जाता है। विदेशों का खुला समाज और संस्कृति उनके सामने होती है, वे उससे प्रभावित भी होते हैं लेकिन कुछ के भीतर देश के प्रति नकारात्मक विचार भी उत्पन्न हो जाते हैं। बंटू नयी शिक्षा की रोशनी में पढ़ा लिखा है उसे यहाँ की संस्कृति से चिढ़ हो जाती है, "पापा! देयर इज नो क्वसचन आफ-चाहना' इट डिपेंड्स अगर जौब सटिसफैक्सन हुआ, एवरीथिंग गोइंग फ़ाईन, देन ह्वाट नौट, वहाँ बसा भी जा सकता है।" [3]

परिचय

'धूल पौधों पर' उपन्यास में उच्चशिक्षा व्यवस्था को आलोचना के दायरे में लिया गया है एम.फिल, पीएच-डी. जैसी शिक्षा हेतु आयी हुयी छात्राओं के साथ शिक्षकों के व्यवहार का पर्दाफास किया गया है। विश्वविद्यालयों में सेक्स और शिक्षा का अन्तः सम्बन्ध भी दिखाया गया है। नायिका से उसके शोध निर्देशक के बीच शारीरिक शोषण का और मानसिक ह्रास का भी चित्रण किया गया है। विभाग के प्रो० कैशिक आशिक मिजाज के थे, वे अपने को कुछ हट कर दिखाने के लिए कविता भी लिखा करते थे, नायिका का उन्हीं के अंडर शोधकार्य संपन्न होना था, वे उसे कमरे में बुला लेते और तब तक बिठाए रखते जब तक सब चले न जाते, "प्रो० कौशिक ने उससे साफ़-साफ कहा-तुम जानती हो कि मैं कवितायेँ लिखत हूँ, अपनी संवेदना को जीवित रखने के लिए जरूरी है कि उसे सौन्दर्य का स्पर्श मिलता रहे, जैसे पढ़ाई में मैं तुम्हारी मदद करता हूँ, वैसे तुम कवितायेँ लिखने में मेरी मदद करो। मैं तुम्हें बौद्धिक संतोष दूँगा, तुम भावनात्मक संतोष दो। वह प्रो० कौशिक का इरादा भाँप गयी उस बिंदु पर ला दी गयी, जब उसे अपनी जमीन पर खड़ा हो ही जाना था। जब-जब वह ऐसे किसी मुकाम पर पहुँचा दी जाती तो पता नहीं उसके भीतर क्या हो जाता। रीढ़ की हड्डी तन जाती आँखों में चिंगारियाँ निकलने लगतीं।"[4] उच्चशिक्षा व्यवस्था में बढ़ता 'प्राइवेटाईजेशन' डिग्रीधारी लोगों के सामने समस्या खड़ी कर रहा है, इस पर तल्ख़ टिप्पणी करते हुए गोविन्द मिश्र ने लिखा है, "डिग्री मिलते ही उसने उस शहर में लेक्चरर पद के लिए दरख्वास्त लगाना शुरू किया। यहाँ भी धंधेबाजी थी एक और चलन का रास्ता सरकार ने दिखा दिया था। अस्थायी नियुक्तियाँ भी न करो ठेके पर रखो, सत्तर रुपये प्रति लेक्चरर। जुलाई में रखा और गर्मियों की छुट्टियों के पहले ज्यादातर लेक्चररों की छुट्टी देश में उच्चशिक्षा का कबाड़ा हो रहा हो तो अफसरों की पौ बारह थी।"[5] शिक्षा में 'आरक्षण व्यवस्था' के लिए वी० पी० सिंह के द्वारा लाया 'मंडल कमीशन' देश के सवर्णों की आँख में किरकिरी बन गया था, 'धूल पौधों पर' पर की नायिका के सौतेले भाइयों ने उसके एक मात्र सगे भाई को कमीशन की आग में झोंककर जला डाला और कहा कि आरक्षण के विरोध में उसने आत्महत्या कर ली थी। दिल्ली की सड़कों पर प्रगतिशील युवाओं ने आरक्षण का विरोध, मार्च निकाल कर किया था। देश की पचासी प्रतिशत जनसंख्या को उसके हक़ को दिलाना कहाँ का अन्याय था। किन्तु देश के पढ़े-लिखे सवर्ण छात्रों ने उसे अन्याय घोषित किया। प्रसिद्ध इतिहासविद रामचंद्र गुहा ने लिखा-"जैसा कि हिन्दुस्तान में अमूमन कई मामलों में होता है, सरकारी नीतियों के बारे में बहसें अखबारों और अदालतों में की जाती हैं उसके बाद ही वो आम जनता में फैल जाती हैं। 19 सितम्बर को दिल्ली विश्वविद्यालय के एक छात्र राजीव गोस्वामी ने मंडल आयोग कि रिपोर्ट को लेकर सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के खिलाफ अपने शरीर में आग लगा ली। वह बुरी तरह जल गया लेकिन जिन्दा बच गया। उसके ऐसा करने से कई दूसरे छात्र भी आत्मदाह करने पर उतारू हो गए। वे आत्मदाह करने वाले सारे लोग ऊँची जातियों से ताल्लुक रखने वाले हिन्दुस्तानी थे, जो खुद भी सरकारी नौकरी पाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन अब उनके सपनों को भी नजर अंदाज किया जा रहा था। कुल मिलाकर 200 के लगभग आत्महत्या की कोशिशें हुयीं, जिनमें 62 कामयाब भी हो गयीं।"[6] देश के भीतर हक़ के लिए सदियों से संघर्षरत जनता जब अधिकारों के प्रति जाग्रत हुयी तो सवर्णों ने उसका खुला विरोध किया। साहित्य के माध्यम से गोविन्द मिश्र ने इस ज्वलंत प्रश्न को उठाकर पुनः विमर्श का मुद्दा बना दिया है। 'धूल पौधों पर' उपन्यास में व्यक्त मंडल कमीशन की सच्चाई भारत के इतिहास में दर्ज है। जिस ओर अवलोकन की आवश्यकता है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 11, Issue 3, March 2022 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1103091 |

गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में शिक्षा के प्रति अनेक पहलुओं पर विचार किया गया है गाँव की बिगड़ती शिक्षा व्यवस्था और वहाँ की राजनीति का शिक्षा में दखलंदाजी तथा कालेजों में व्याप्त शिक्षा के नाम पर गुंडागर्दी और शिक्षा माफियाओं का शिक्षा का बाजारीकरण, विश्वविद्यालयों में व्याप्त शिक्षक अराजकता, स्त्रियों का शोषण, दलित-पिछड़े बच्चों के साथ जातीय भेदभाव, उन्हें शिक्षा से वंचित करना, तरह-तरह के षड्यंत्रों द्वारा संस्थानों से बहिष्कृत करना सगल बन गया है।[4]

गोविन्द मिश्र आज की शिक्षा पद्धति पर बहुत सारे सवालों को उठाकर उन पर सोचने को विवश कर देते हैं। शिक्षा में आज जितनी अराजकता आ गयी है, शायद पिछले के वर्षों में नहीं रही होगी परजीवी वर्ग के लोग अब शिक्षा पर अपना अधिकार कर के बैठ गए हैं, भारत की बहुसंख्यक आबादी से आने वाले छात्रों और छात्राओं के प्रति विश्वविद्यालयों में उनका सांगठनिक शोषण होता है, जब वे कैंपस में दाखिल होते हैं तभी से उनका बेजा इस्तेमाल शुरू हो जाता है, उनका मानसिक और शारिक शोषण शिक्षा में मैरिट के नाम पर, शोध के नाम पर, नौकरी के नाम पर किया जाता है। 'धूल पौधों पर' उपन्यास के पात्र और दर्शनशास्त्र के प्रो० प्रेमप्रकाश ने शोषण और रिश्वत पर टिप्पणी करते हुए कहा-"जाल ऐसा बिछा रखा है कमबख्तों ने न दो, होम हो जाओ तो भी तुम इस भ्रष्टाचार को तो ख़त्म नहीं कर सकती। एक तुम्हारे न देने पर क्या यह सिलसिला रुक जाएगा ? एक डॉ० कौशिक ही नहीं ठीक इस तरह कितने डॉ० कौशिक कितने विद्यार्थियों को इसे देने को मजबूर कर रहे होंगे ? सबसे भयानक बात कि जो बेचारे बेरोजगार हैं, गरीब हैं उन्हें भी रिश्वत देने के लिए मजबूर किया जाता है और मजबूर करने वाले वे ही लोग जिनके पास वे शिक्षा लेने के लिए आते हैं।" [7] शिक्षा व्यवस्था पर गोविन्द मिश्र ने बहुत ही तल्ख़ टिप्पणियाँ की हैं। जो आज के समय में बेहद प्रासंगिक हो जाती हैं। जब तक शिक्षा व्यवस्था में समरूपता नहीं आयेगी तब तक वंचित तबके के बच्चों का शोषण ऐसे ही जारी रहेगा भारत की शिक्षा व्यवस्था दोयम दर्जे की हो गयी है, इसके सबसे बड़े जिम्मेदार यहाँ के शिक्षा माफिया हैं। यहाँ के राजनीतिज्ञ हैं, जो लुटेरे बनकर शिक्षा का व्यवसाय कर रहे हैं। भारत में हालात यह हो गयी है कि नामांकन विद्यालय में और शिक्षा कोचिंग सस्थाओं में, फिर ऐसी क्या बाध्यता है कि शिक्षा के लिए नामांकन विद्यालयों में हों उसे भी कोचिंग संथाओं के हवाले कर देना चाहिए, दूसरी बड़ी बात आज की शिक्षा व्यवस्था में देखी जा रही है कि प्राइवेट विश्वविद्यालयों को खोलने की मान्यता सरकारें दे दिया करती हैं, जहाँ पर वचिंत तबकों से आने वाले बच्चे कभी भी प्रवेश नहीं पा सकते इन विश्वविद्यालयों में डिग्रियाँ मात्र खरीदी जाती हैं, गुणवत्ता नहीं प्राइवेट संस्थाओं का अर्थ ही है गुण हीनता का तकाज़ा। गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में इन बहुत सारे सवालों को उठाया गया है, आज आवश्यकता है कि शिक्षा को शिक्षा के रूप में प्रदान किया जाय उसे व्यवसाय का रूप न दिया जाय, बहुत सारी प्रतिभाओं को आज की शिक्षा व्यवस्था ने उपजने से पहले ही ख़त्म कर दिया है। यह स्वस्थ समाज के सपने के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है।[5]

विचार – विमर्श

गोविंद मिश्र कथा-साहित्य के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर हैं। सन् 1963 से वे लगातार सृजनशील है। ग्यारह उपन्यास, बीस कहानी संग्रह, छह यात्रा वृतांत, आठ निबंध, चार बाल साहित्य, दो आलोचनात्मक पुस्तकें एवं छह अनुवाद इत्यादि लिखकर आपने समकालीन हिन्दी कथाकारों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। बहुआयामी प्रतिभा के धनी गोविंद मिश्र ने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज के बदलते परिदृश्य का बखूबी चित्रण किया है। पारिवारिक जीवन और स्त्री-पुरूष संबंधों का यथार्थ, टूटते परिवार और बिखरते मनुष्य, मानवीय संबंधों का अवमूल्यन, अंतरंगता की ललक, मध्यवर्गीय चेतना, आधुनिक नारी, शहर एवं कस्बे में सांस्कृतिक टकराव, टूटन की समस्याएँ, छटपटाती नैतिकता, मानवीय गर्माहट की खोज, स्वप्न भंग का यथार्थ, शासकीय तंत्र के तिलिस्म का पर्दाफाश इत्यादि विषयों पर आपने खूब लिखा। गोविंद मिश्र यशस्वी कथाकार है। हिन्दी कहानी में अपनी रचनाशीलता से आपने अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है। जब हिन्दी कहानी भांति-भांति के प्रयोगों से आक्रांत थी तब आपने जमीन से जुड़ी सच्चाइयों को अपनी रचनाओं में केन्द्रीयता दी। मानवीय मनोविज्ञान के अतल मैं उतरकर आपने उन जीवन सत्यों को उद्घाटित किया जिन पर स्थूल यथार्थ औपचारिकता, असमंजस, उपेक्षा आदि की धूल जम गई थी। समय के अनुरूप आपने विकासशील समाज के संघर्ष व स्वप्न को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति दी है।

गोविंद मिश्र की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की विभीषिका के चित्र मिलते हैं। समकालीन हिन्दी कथाकारों में अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनाने वाले गोविंद मिश्र उन थोड़े से तटस्थ लेखकों में से है, जो सभी तरह के सिद्धांतों में व्याप्त 'यूटोपिया ' को अस्वीकार करते हैं और आस्था तथा मानवीय मूल्य के अभाव में सार्थक जीवन, को असंभव मानते हैं। 'उलझती टूटती चूड़ियाँ मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं का बखान करती है- ''कहने के लिए तो कुछ चाहिए था, सभी कुछ मिल गया है मुझे। फिर भी जैसे कुछ नहीं मिला बड़ा रीता-रीता सा महसूस किया करती हूँ। यह रीतापन घर में दौलत और बच्चों के बढ़ने के साथ-साथ और भी बढ़ता जाता है। जितना सोचा समझा है अपने आपकों उससे इसी निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि मुझे प्यार की भूख है। ' ' मध्यवर्गीय सोच पर आधारित कहानी

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 11, Issue 3, March 2022 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1103091 |

'सतह की झाग ' कहानी का उदाहरण द्दष्टव्य है-''अगर मैं होती तो इन उदास आंखों में कुछ हंसी खिलाने के लिए कुछ प्रयत्न करती। क्या यह भी एक खास तरीके की खुशी नहीं है। ' ' मध्यवर्गीय पढ़ी लिखी स्त्रियाँ आधुनिकता के फेर में अपने पति का सम्मान नहीं करती। उन्हें अपने मित्रों से परिचय कराने में शर्म महसूस करती है- ''आपकी कितनी चीजें बर्दास्त करनी पड़ती है। आप नहीं जानते अपने फ्रेण्ड्स के बीच कितना नीचा देखना पड़ता है मुझे। नये जूते क्यों नहीं लेते?'' गोविंद मिश्र के अनुभवों का दायरा ज्यादातर महानगरीय मध्यवर्ग की भित्ति पर टिका हुआ है। अतः लेखक ने इस वर्ग की मूल्यगत पीड़ाओं को अपनी कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। 'चैखटे ' एक सांकेतिक कहानी है। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से जीवन के आपाधापी में व्यस्त मध्यवर्गीय जीवन की विभीषिका को रेखांकित किया है।[6]

गोविंद मिश्र की चर्चित कहानी 'धांसू ' आज के यथार्थ को चित्रित करती कहानी है। इस कहानी में मानवीय अंतस की पीड़ा और व्यवस्था में दबे उसके नाना श्रोतों को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है। 'बहुधंधीय ' इसी दिशा में एक प्रयास है। यह कहानी भारतीय जीवन के हर क्षेत्र में उपस्थित उन बिचैलियों को लेकर लिखी गई है, जो सत्ता और सामाजिक अन्याय, अनाचार और उत्पीड़न के बीच व्यवस्थापक स्थायित्व का पोषण करते हैं- ''मेरा असली ताल्लुक तो उस राजनीति से है जो आदमी को मारती है और वहाँ हर दल की मार एक सी है ....यहाँ तक की उन गैर दलीय आदमियों की भी, जो जनता की सेवा के विकास से पीड़ित होने के कारण तंत्र की मार मारते हैं। ' ' इसी संदर्भ में डाॅ. सुधीर चंद्र लिखते है-''समाज में व्याप्त विकृतियाँ बार-बार उभरकर आती है जो विशेषकर बेईमानी और भ्रष्टाचार और इनसे त्रस्त आम आदमी की बेबसी उभारते हैं। ' ' मिश्र जी की कहानी 'शापग्रस्त ' में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का चित्रण है इस कहानी में अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण ही स्त्री ग्यारह वर्ष तक साथ रहने के बाद अपने पति को छोड़ देती है। देखा जाए तो बाहरी चमक-दमक और ऐशो आराम प्रिय स्त्रियाँ चंद पैसों के लोभ में अपना भरा-पूरा परिवार त्याग देती है। मानवीय मूल्यों के अभाव में आज जीवन खोखला होता जा रहा है। बच्चे बड़े सभी मानसिक द्वन्द से ग्रसित है। वे उचित अनुचित की विवेचना ही नहीं करते।

दाम्पत्य प्रेम की यथार्थता को चित्रित करती गोविंद मिश्र की कहानी 'एक बूंद उलझी ' मध्यवर्गीय जीवन की व्यथा-कथा पर आधारित है। औद्योगिकीकरण के इस युग में लोगों की यह धारणा है कि पैसे से सब कुछ खरीदा जा सकता है। गलत साबित होता है। जीवन यथार्थ से टकराकर स्वप्नभंग होते कथानायक की स्थिति द्दष्टव्य है - ''एक मुकाम पर पहुँचकर कैसी निकल आती है जिंदगी.............फटेहाल, जियो तो कुछ नहीं, मर जाओं तो कुछ नहींः किस तेजी से सब चीजे एक साथ दगा दे गई - बीवी, शराब, नींद, भूख सभी। रह गया सिर्फ चोला। ' ' इसी तरह गोविंद मिश्र ने 'बोझ ' नामक कहानी में मध्यवर्गीय स्त्री की सोच को रेखांकित किया है। इस कहानी में पति-पत्नी पर और पत्नी-पति पर शक करती है। अंततः अपने दो नन्हें-नन्हें बच्चों को छोड़कर पत्नी आत्महत्या कर लेती है। भावुकता से लिया गया निर्णय कभी-कभी गलत साबित हो जाता है। मिश्र जी ने 'लहर ' नामक कहानी में इसी तथ्य को रेखांकित किया है। इस कहानी की नायिका रश्मि पति के मार के डर से उससे तलाक ले लेती है और सर्वेश नामक युवक से विवाह कर लेती है परन्तु यहाँ भी उसे धोखा ही मिलता है क्योंकि सर्वेश क्रूरर नहीं चालाक था। पुरूष की मानसिकता को उजागर करता यह उदाहरण द्दष्टव्य है - ''एक बार विवाह हो गया तो लड़की लाख पढ़ी-लिखी हो कमाऊ हो, आत्म निर्भर हो सबसे पहले वह गृहस्थित है। जिसे पति घर और बच्चों के लिए होम होना ही है। उसकी अपनी जिंदगी कुछ नहीं। ' ' पश्चाताप की अग्नि में जलती नायिका रश्मि अंततः कुछ उठती है- ''मैं सोच भी नहीं सकती थी कि ऐसे भी बातें की जा सकती है किसी के साथ ....इतने कोमल ढंग से। इतनी करूणा से जीवन के बारे में किसी ने नहीं समझाया........ मैं जीना सीख रही हूँ। ' '

कुछ लोगों की जिंदगी ऐसी होती है कि उन्हें मरते दम तक काम करना पड़ता है। चाहकर भी वे आराम की जिंदगी नहीं जी पाते। परिस्थितियाँ उन्हें काम करने पर मजबूर कर देती है। ऐसी ही स्थिति 'इजाजत नहीं ' नामक कहानी के नायक कैलाश बाबू की है। इसी तरह मिश्र जी की कहानी 'हवाबाज ' जीवन की सच्चाईयों को सोच में बदल देती है- ''जिंदगी जो जीना है उसे हम भूलते जा रहे हैं, उलझे ज्यादा रहते हैं। तुमने एक बात नोट की है .....अब कम लोग ठहाके मारकर हँसते दिखाई देते हैं। ' ' महानगरीय सोच पर आधारित इस कहानी में माता-पिता के विरूद्ध बेटी पुलिस स्टेशन में शिकायत लिखवाती है। तब माता-पिता को लगता है कि उनकी परवरिश में कहीं-न-कहीं कमी रह गई है- ''लाड़ प्यार से पाली गई अपनी बच्ची को अपनी आँखों के सामने धीरे-धीरे काॅल गर्ल बनते देख रहे हैं, कुछ नहीं कर सकते। ' ' इसी तरह 'साधें ' कहानी में पुरानी और नई पीढ़ी मध्यवर्गीय परिवार अपने बच्चों की खुशी के लिए जी जान लगा देते हैं वे उनकी हर छोटी से छोटी खुशियों के लिए अपना सब कुछ दाँव व लगाने को तत्पर रहते हैं। परन्तु वही संतान बड़ा होकर अपने माता-पिता की आशाओं - आकांक्षाओं के साथ खिलवाड़ करता है। 'अक्षम ' कहानी में मिश्र जी ने संतान की माता-पिता के प्रति सोच को दर्शाया है। डाॅक्टर पुत्र माता-पिता के प्रेम को अंत तक न समझ सका। इस तरह गोविंद मिश्र की अनेक कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रित है।[7]

गोविंद मिश्र एक सधे हुए कथाकार है। उनकी कहानियाँ पाठक को बार-बार आकर्षित करती है। उनकी हर एक कहानियों का विषय पृथक होता है। वर्तमान मशीनीकरण के इस युग में मानव ने उन्नति के अनेक सोपान पार कर लिए हैं परन्तु मध्यवर्गीय सोच एवं मध्यवर्गीय स्त्री की स्थिति में आज भी विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं पड़ता। मिश्र जी यथार्थवादी कथाकार हैं उन्होंने जीवन को करीब से देखा है। तभी तो उनकी कहानियाँ कभी अपनी तो कभी हमारे आसपास की कहानी प्रतीत होती है। आज परिवार में पति और पत्नी के अहं का टकराव और एक-दूसरे के प्रति मन में बढ़ता जा रहा संशय आधुनिकता और परंपरा के टकराव का फल है। ''कोई फर्क नहीं पड़ता अगर वे दोनों अपने-अपने ढंग से जिये.........लेकिन फिर कहीं कोई फर्क पड़ने लगता है जो दोनों को एक-दूसरे से मानसिक

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 11, Issue 3, March 2022 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1103091 |

स्तर पर दूर हटाता है। ' ' अंतद्र्वन्दों के चित्रण में मिश्र जी को कमाल हासिल है। तत्सम भाषा के साथ बोलचाल और मुहावरेदार भाषा का प्रयोग गोविंद मिश्र की सृजनात्मकता की विशेषता है। उनके कथा-साहित्य का देशज चरित्र उनकी शक्ति है। तभी तो शैलेष मटियानी ने लिखा है - ''गोविंद मिश्र अपनी पीढ़ी के सबसे महत्वपूर्ण कहानीकार हैं क्योंकि भाषा और कथ्य दोनों धरातलों पर उनके यहाँ अपेक्षाकृत ज्यादा विस्तार है बल्कि कहना तो यहाँ तक चाहूँगा कि अपनी पीढ़ी में भाषा और संवेदना के स्तर पर प्रेमचंद के सबसे निकट गोविंद मिश्र ही दिखाई पड़ते हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गोविंद मिश्र समकालीन कथाकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उनकी अधिकांश कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की विडंबना एवं मध्यवर्गीय चेतना के दर्शन होते हैं।[5]

परिणाम

नारी प्रकृति की अनुपम एवं रहस्यमयी कृति है जिसके आन्तरिक मन की पर्तों को जितना अधिक खोलते हैं, उसके आगे एक नवीन अध्याय दृष्टिगत होता है। अपने अनेक आकर्षणों के कारण नारी साहित्य का केन्द्र बिन्दु रही है। प्राचीन समय में स्त्री शिक्षा को भले ही महत्वहीन समझा जाता रहा हो, परन्तु वर्तमान समय में इसे विशेष महत्व दिया जाने लगा है। शिक्षा के बल पर आज की स्त्री आवश्यकता पड़ने पर घर की चाहरदीवारी की कैद से निकलकर स्वतंत्र हो सकी है, उत्पीड़ित होने पर प्रतिशोध कर सकती है। उचित निर्णय लेकर उचित कदम उठाकर आत्मरक्षा कर सकती है। गोविन्द मिश्र जी का कथा साहित्य अधिकांश नारी केन्द्रित है। मिश्र जी का क्षेत्र शिक्षा जगत होने के कारण उनके अधिकांश नारीपात्र-बुद्धिजीवी हैं। मिश्र जी के नारी पात्र अन्तद्र्वन्द्व से घिरे कुण्ठित एवं असहाय तथा कहीं पर परम्परागत रूप दृष्टिगत हुआ है किन्तु अधिकांश नारी-पात्र किसी भी स्थिति में पुरुष की दासता सहने को तैयार नहीं हैं, भले ही उसे उसका कितना भी बड़ा मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। मिश्र जी ने नारी के विविध रूपों को जीवन की सच्चाई के साथ रूपांकित किया है।

गोविन्द मिश्र जी के कथा साहित्य में अन्य कथाकारों की अपेक्षा अधिकांशतः नारी मूल विषयक के केन्द्र में रहती है। नारी के जिस जीवन संघर्ष को उन्होंने समाज में देखा और अनुभव किया, उसे कथापात्रों के माध्यम से साहित्य में व्यक्त किया है। उनके उपन्यासों एवं कहानियों में नारी पारिवारिक मूल्यों को जोड़ने के लिए प्रयासरत है तो कहीं माता-पिता के विस्मृत होते अस्तित्व को सम्भालने के प्रयास में स्वयं टूटती तथा स्वयं को सम्बल देती दृष्टव्य होती है। यह परम्परागत नारी अपने पूर्ण सहयोग तथा सामथ्र्य से समाज को टूटने से बचा रही है। कभी ममतामयी माँ के रूप में, कभी आदर्श पत्नी के रूप में विवाह-संस्था को बनाये हुए हैं, जहाँ व्यक्ति को आर्थिक दंश तोड़ने का प्रयास करते हैं। वहाँ मिश्र जी की नारी बहुत कुछ झेलते हुए भी परिवार को बिखरने नहीं देती। ''पाँच आँगनों वाला घर'' की जोगेश्वरी पति द्वारा प्रताड़ित एवं अपमानित होने पर भी अपने पत्नीत्व की सार्थकता परिवार व पति के समर्पण में पाती है। ''माँ ने कैसे पग-पग पर पिता द्वारा दी गई यातनाएँ झेली, उनकी कमियों के एवज में अपने भीतर नई-नई खूबियाँ उभारीं। पिता उस समय के थे जब औरत को पीटना मामूली बात थी। माँ बड़े घर की थीं........ इसलिए होशोहवास में तो पिता हिचककर रह जाते, पर नशे में हुए तो भीतर से कमरा बन्द कर पूरी कसर निकाल लेते...... जिस तरह माँ सांसारिक जीवन में उन्हें दबाकर धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थीं। माँ के सामने एक ही जोरदार इच्छा थी-उनका घर बड़ा होना है-पैसे से, परिवार से।............. उन्होंने अपने उद्देश्य के लिए जब जरूरत हुई, अपने पति को भी एक किनारे सरका दिया।''

पति के आकस्मिक दिवंगत हो जाने पर शोक व्यक्त करने का समय जोगेश्वरी के पास नहीं था। वह तटस्थ होकर उचित निर्णय लेना जानती थी। उसने बड़े बेटे राधे लाल को पिता की जगह गृहस्थी के लिए तैयार कर लिया था। जोगेश्वरी परिवार के प्रति समर्पित रहती है, ''माँ को इतनी फुर्सत नहीं थी, वे पिता के असमय निधन के दुःख में घुलतीं। उन्होंने पिता की जगह तैयार करना शुरू किया राधेलाल को। जब तक राधेलाल को कुछ पता चलता .... वे एक बड़ी गृहस्थी के स्वामी वाले साँचे में फिट किए जा चुके थे।''2

वर्तमान में जहाँ पारिवारिक रिश्ते क्षीण होते जा रहे हैं, वहाँ सामाजिक सम्बन्धों को बनाये रखने के लिए प्रयासरत 'लहर' कहानी की रश्मि तब अपने आत्मविश्वास को डिगा देती है, जब उसे पता चलता है कि उसे इस गृहस्थी को सम्भालना है। वह आत्मनिर्भर होते हुए भी पुरुष प्रधान समाज की दृष्टि में एक गृहणी है, ''पुरुष प्रधान समाज उसे अपनी सोच के लायक रखता ही कहाँ है। कैसी सभ्य-सम्य मार पड़ती है उस पर। हमारी ये बड़ी-बड़ी बातें कैसी गुलामी में जकड़कर रख देती हैं उसे। एक बार विवाह हो गया तो लड़की लाख पढ़ी-लिखी हो, कमाऊ हो, आत्म निर्भर हो, सबसे पहले वह गृहस्थिन है, जिसे पति, घर और बच्चों के लिए होम होना ही है। उसकी अपनी जिन्दगी कुछ नहीं।''3 अशिक्षा, अज्ञानता और अधीनता के अंधकार युग से शिक्षा, जागृति और समानता के प्रकाश पंुज में आने के पश्चात् भी नारी स्वयं को शोषित तथा अस्तित्वहीन समझने के लिए विवश होती है। रश्मि वैवाहिक जीवन में सामंजस्य करती हुई चलती है। कभी-कभी वह अपने स्त्री होने पर भी दुःख व्यक्त करती है ''अपना स्त्री होना खराब लगता है..... मैंने खुद को क्या बना डाला है। कभी-कभी लगता है जैसे मैं हूँ ही नहीं....... लता हूँ, हवा का कोई गड्ढा हूँ।'' यहाँ नारी पात्र भारतीय संस्कारों से युक्त एवं सामाजिक मान्यताओं को स्वीकार करते चलते हैं, परन्तु आधुनिक एवं पाश्चात्य प्रभावों को अलग नहीं कर सकते।

आधुनिक भारतीय नारी पुरुष के साथ अर्थोपार्जन के लिए कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। वह दोहरी भूमिका निभाते हुए अधिक महत्वपूर्ण हो गयी है। वह स्वयं क्यों पुरुष का उत्पीड़न, शोषण, अत्याचार तथा बन्धन सहे? नारी अपने बढ़ते कदमों में आने वाली बेड़ियों के रूप में संस्कार एवं परम्पराओं को तोड़ने में कतई संकोच नहीं करती और न ही किसी भी प्रकार का समझौता

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 11, Issue 3, March 2022 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1103091 |

करने के लिए विवश होती है। मिश्र जी ने नारी का विद्रोही पक्ष अपने साहित्य में अभिव्यक्त किया है। उन्होंने आज की नारी के विविध रूपों को उसकी अच्छाईयों, बुराइयों एवं कमजोरियों के साथ चित्रित करने का प्रयास किया है। "धूल पौधों पर" उपन्यास की नायिका में अपने पति के साथ हर कदम पर सामंजस्य करना चाहती है, परन्तु उसके ससुराल वाले उसे एक समान की तरह समझते हैं। जिस तरह वह प्रोफेसर प्रेमप्रकाश से कहती है कि "मैं कोई चीज हूँ, जानवर हूँ या पत्नी हूँ तो इसलिए मनुष्य भी नहीं हूँ? मेरी इच्छा-अनिच्छा कुछ नहीं....... रात भर उसने मुझे एक जबर कुत्ते की तरह चींधा.... मेरे शरीर का कोई हिस्सा नहीं छोड़ा..... यहाँ तक कि मेरे बाल खींचे, जबरदस्ती मेरे कपड़े उतार फेंके, छाती पर नाखूनों से लकीरें खींच दीं, इधर-उधर कहीं भी दाँत गड़ाये। रात भर मुझे रौंदता रहा......।।"5 'मैं' के मन में विद्रोह चलता रहता है, विद्रोह की ज्वाला में वह प्रतिदिन जलती रहती है। उसको समझ नहीं आता कि वह क्या करे? समाज के बन्धनों में वह इस तरह बंधी हुई है कि कितना भी विद्रोह करे मगर निकलने में असफल रहती है।

नारी की स्वतंत्रता और समानता के बाधित होन का एक पक्ष यह भी है कि नारी ही नारी की समता में सबसे बड़ा अवरोध है। घर में जब बेटी का जन्म होता है तो उसके लिए अलग संस्कार और नियम होते हैं तथा बेटे के जन्मोत्सव पर संस्कार और विधान अलग होते हैं। समाज में नारी असमानता की शिकार होती है जिसे पुरुष वर्ग अपने विधान की जंजीरों में जकड़ना चाहता है। मगर आज के समाज में स्त्री ही स्त्री की स्वतंत्रता में बाधक बनी हुई है। नारी जब नारी की प्रतिद्वन्द्वी होती है तो इसमें नारी का भी दोष नहीं है कि वह क्यों इस तरह नारी स्वतंत्रता को बाधित कर रही है। 'खिलाफत' उपन्यास एक इस्लामिक स्टेट की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसमें आयशा अन्द्राबी कैम्पेन चलाते समय स्त्रियों पर धर्म तथा संस्कारों का आरोपण करते हुए उनकी स्वतंत्रता पर रोक लगाने का प्रयास करती है "कोई मुल्क या तो मुस्लिम है या गैर मुस्लिम, तीसरी कोई चीज नहीं। उसने दुख्तरान-ए-मिल्लत चला रखी है। वह कश्मीर यूनिवर्सिटी से अरबी में पोस्ट ग्रेजुएट है, कश्मीर में बुर्का पहनने के लिए कैम्पेन चला रही है-जो औरत बिना बुर्का नजर आयी, उसके मुँह पर कालिख पोत देती हैं। काम पर जाने वाली औरतों के पीछे पड़ जाती हैं कि वे काम पर न जायें, औरतों का काम है घर पर रहना। औरतों में आजाद-ख्याली के एकदम खिलाफ हैं।"6

वर्तमान की नारी के पास दूसरों के विषय में सोचने का समय नहीं है। वह स्वयं के सम्बन्धों का निर्वाह करते हुए इतनी दूर आ गयी है कि अपने लिए भी अपरिचित सी हो गई है। इस अपरिचय बोध की इतनी अधिकता बढ़ गयी है कि मानवीय सम्बन्धों की मिठास अब दृष्टिगत नहीं होती।

नारी की भावुकता, कोमलता, ममता और सहनता मूलभूत प्रकृति है। आधुनिक परिवेश में नारी के यहीं गुण समाज के मूलाधार हैं जिस पर वह टिका है। मिश्र जी ने नारी के भावुक रूप को अभिव्यक्त किया है। 'तुम हो' कहानी की सुषमा को जब उसके पिता उसके ससुराल वालों पर दहेज का झूठा आरोप लगाकर अपने घर ले आते हैं। तब सुषमा के पिता के दबाव में आकर भावनाओं को मन में समेटने के लिए विवश होती है। फिर भी न जाने क्यों उसका मन ससुराल पक्ष की ओर जाता है। वह अपने पिता के चंगुल में फंस गई थी, वहाँ से निकलने में वह असफल हो जाती है और भावुकता की ओट में निरन्तर कुण्ठित होती जाती है। वह सोचती है, "उसके बारे में क्या सोचती होगी सास या ननद! जिसके लिए उन्होंने क्या-क्या किया, वह यह कह रही हैं। ऐसा झूठ! क्या छवि बनी होगी सुषमा की वहाँ! यहाँ किसी से यह कहो तो कहेंगे अब कौन सी छवि! वहाँ किसी के सोचने-ओचने का क्या, पागल हो क्या? तुम अब तो वहाँ जाने से रहीं। रहने की बात तो और दूर की .... तो तुम्हें क्या मतलब?" सुषमा मानसिक दबावों से मुक्ति और अपने स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना का पूरा प्रयास करती है। वह पहले मूक-सी बनी रहती है। उसे लगता है कि वह असहनीय है। वह स्वयं निर्णय करने में अक्षम-सा महसूस करती है तथा स्वयं पिता और पति के निर्देशों का अनुसरण करती है। मगर जब वह यथार्थ की दृष्टि से दोनों के पक्षों का मूल्यांकन करती है क्योंकि पिता उसके पति पर दहेज का आरोप लगाते हैं। जिसका समर्थन सुषमा नहीं करती और कुण्ठा की ज्वाला से निकलकर वह पिता के समक्ष अपना पक्ष रखती है, "मेरे ब्याह में जो खर्चा हुआ, वह निकल आया, उससे ज्यादा ही। आगे हम उनसे कुछ नहीं लेंगे। रघु को छोड़कर बाकी सबने मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया। रघु ने एक बड़ी कृपा की कि मुझे छुआ तक नहीं। जिस झूठ को लेकर हम लड़ रहे हैं, उसे मैं और नहीं खींच सकूँगी। अब यह लड़ाई बन्द करिए। मैं पुलिस में कोई शिकायत नहीं करूँगी। आप और रघु के पिता हट जाइए। रघु और मैं आपसी रजामंदी से तलाक ले लेंगे-साधारण तलाक।"8 सुषमा अनेक विरोध तथा कुण्ठाओं के बावजूद अपने पिता का विरोध करती है। साधिकार स्वतंत्र रूप से रहना चाहती है। वह अवरोध सहन नहीं कर सकती। अपने निर्णयों पर दूसरों का हस्तक्षेप उसे अस्वीकार-सा प्रतीत होता है, "पहली बार उसने पिता से साधिकार कुछ कहा। अधिकार अपना, अपने होने का। खामोशी की अदृश्य डोर अपने पिता के चेहरे को किसी तरफ खींच रही थी। सुषमा उनके क्रोध झेलने को तैयार थी।"[5,6]

निष्कर्ष

आधुनिक नारी पुरुष के साथ प्रतिस्पर्धा के क्षेत्र में उतर पड़ी है। वह पुरुष के साथ केवल भावनात्मक रूप से जुड़ी है अपितु प्रतिस्पर्धा ने उसे पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने पर विवश किया है। पुरुष सत्ता समाज से मिलने वाले शोषण, उत्पीड़न और बन्धन के विरुद्ध लड़ने का वह साहस करती है। आज पुरुष की भोग्या बनकर जीने वाली स्त्रियों की संख्या कम होती जा रही है। 'तुम्हारी रोशनी में' उपन्यास में सुवर्णा नामक विवाहित स्त्री की कहानी है। वह अपने पति रमेश की युवा सोच और सहयोग के कारण पूर्ण स्वतंत्र ढंग से रहती है। वह नौकरी करने के बावजूद घर और बच्चों के प्रति न सिर्फ यह कि वह उदासीन नहीं है, इस

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 11, Issue 3, March 2022 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1103091 |

मोर्चे पर भी वह अपनी सफलता के प्रति सजग रहती है। वह प्रतिस्पर्धा में कहती भी है, "गृहस्थिन होना गर्व की बात है मेरे लिए.....। यहाँ भी अपना काम मुझे उतना ही अच्छा लगता है जितना दफ्तार का काम। जैसे मैं दफ्तर में सफल होना चाहती हूँ वैसे ही घर में भी। वहाँ मैं किसी आदमी से पिछड़ी नहीं रहना चाहती, यहाँ किसी औरत से नहीं।"10 सुवर्णा जब मोहन के साथ पिकनिक पर जाती है तब रमेश उसके साथ अनैतिक व्यवहार करता है, साथ ही उस पर पति के अधिकार का आरोपण लाद देता है कि वह उससे बिना पूछे किसी से नहीं मिलेगी। वह उस पर भावनात्मक हमला ही नहीं, अपितु शारीरिक यातना भी देता है। गाली-गलौज और मारपीट के साथ वह उसके संवेदनात्मक अंग रूपी बच्चों और उसके बीच दीवार खड़ी करने का प्रयास करता है। वह इस नीति को अपनाकर उसे झुकाना चाहता है, मगर वह तटस्थ होकर उत्तर देती है, "मैं यह नहीं मानती कि सिर्फ इसलिए कि तुम मेरे पति हो, तुम यह तय करो कि मैं इससे मिलूँ, उससे न मिलूँ। बात तीन चार आदमियांे की नहीं है, उस स्वतंत्रता की है जो ईश्वर ने मुझे दी है और जिसे तुम हड़प लेना चाहते हो...... पर बहस की क्या जरूरत....... तुम इन लोगों से मिलने की बात मान भी लो तब भी मेरा फैसला वही रहेगा।"[7]

सामाजिक, आर्थिक परिवेश ने जब भी पुरुष को कमजोर किया है तब उसने नारी के प्रेमपूर्ण आँचल में ही आश्रय लिया है। मिश्र जी के साहित्य में नारी जहाँ दाम्पत्य जीवन का निर्वाह करती है, वहाँ वह पति की सहयोगिनी बनकर हर कदम पर उसके साथ खड़ी रहती है। 'पाँच आँगनों वाला घर" की ओमी पति का अनुसरण करती हुई चलती है। पति ठीक करता है या गलत, सभी कार्यों में उसके कदम से कदम मिलाकर चलती है। "जब-जब वे ओमी को देखते हैं। यह स्त्री जिसको उन्होंने अपने प्रभावी व्यक्तित्व के सहारे अपने सिद्धान्तों पर चलने को मजबूर किया..... उसकी कितनी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ दबी रह गई... क्या यह करने का अधिकार मोहन को था? मोहन की तरह वह भी पीछे मुड़कर देखती होगी...... जीवन में उसके प्राप्ति? बस पति का अनुसरण किया, पति ठीक था या गलत पता नहीं....... अनुसरण ही जीवन।"

विविध आयामों की ओर बढ़ती हुई नारी के संघर्षों से आकर्षित होकर मिश्र जी ने उसके अनेक रूपों को चित्रित किया है। नारी के ये रूप यदि मन के परम्परागत मूल्यों तथा संस्कारों को सहलाते हैं तो कहीं पर गहरे आघात करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। परिवर्तित परिवेश एवं मूल्यों से प्रभावित नारी विभिन्न स्थानों पर नये रूप में द्रष्टव्य होती है।

नारी के बिना पुरुष अस्तित्व शून्य है। पुरुष जब निसहाय हुआ है, तभी उसे नारी ने सम्बल दिया है। मिश्र जी के साहित्य में नारी के विविध रूप अनेक कोणों से रूपायित होते हैं। विविध आयामों की ओर अग्रसर होती नारी से प्रभावित होकर मिश्र जी ने उसके विविध रूपों का अति सूक्ष्मांकन किया है। नारी के ये रूप एक ओर हृदय के परम्परागत संस्कारों को सहलाते हैं तो दूसरी ओर तटस्थ होकर परिवर्तन की चाह में उन्हें तोड़ने को विवश भी होते हैं। परिवर्तित परिवेश एवं मूल्यों से प्रभावित नारी अनेक स्थानों पर नवीन रूपों में दृष्टिगत होती है। [7]

संदर्भ

[1]शाम की झिलमिल : गोविन्द मिश्र, किताबघर प्रकाशन-नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2017, पृष्ठ संख्या-10
[2]पाँच आँगनों वाला घर : गोविन्द मिश्र, राधाकृष्ण प्रकाशन-नई दिल्ली, आवृत्ति 2012, पृष्ठ संख्या-113
[3]पाँच आँगनों वाला घर : गोविन्द मिश्र, पृष्ठ संख्या 113
[4]धूल पौधों पर : गोविन्द मिश्र, वाणी प्रकाशन-नई दिल्ली, आवृत्ति संस्करण-2014, पृष्ठ संख्या-84
[5]धूल पौधों पर : गोविन्द मिश्र, पृष्ठ संख्या-88
[6]भारत नेहरू के बाद : रामचंद्र गुहा, अनुवादक सुशांत झा, पेन्गुई रेंडम हाउस इण्डिया, गुड़गाँव-हरियाणा. संस्करण 2012, पृष्ठ संख्या-273-274
[7]धूल पौधों पर : गोविन्द मिश्र, पृष्ठ संख्या-86

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 7.569

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com